गाथा (GAATHA)
स्त्री अस्मिता और विमर्श की सहकर्मी-समीक्षित, अर्द्धवार्षिक शोध पत्रिका

ISSN : 3049-3463(Online)
Vol.-2; Issue-2 (July-Dec.) 2025
Page No.- 55-58
©2025 Gaatha
https://gaatha.net.in
Author :

अनुज कुमार

Pre Ph.D – 2022, NET (Qualified), शोधार्थी, हिन्दी विभाग, वीर कुंवर सिंह विश्वविद्यालय, आरा (बिहार).

Corresponding Author :

अनुज कुमार

Pre Ph.D – 2022, NET (Qualified), शोधार्थी, हिन्दी विभाग, वीर कुंवर सिंह विश्वविद्यालय, आरा (बिहार).

टैगोर के कथा साहित्य में नारी चेतना का व्यापक एवं समालोचनात्मक मूल्यांकन

सारांश (Abstract) : प्रस्तुत शोध-पत्र में रवीन्द्रनाथ टैगोर के कथा साहित्य में निहित नारी चेतना का व्यापक एवं समालोचनात्मक अध्ययन किया गया है। टैगोर ने अपने कथा साहित्य के माध्यम से भारतीय समाज में स्त्री की पारंपरिक, दयनीय एवं उपेक्षित स्थिति को रेखांकित करते हुए उसे आत्मबोध, आत्मसम्मान और स्वतंत्र चेतना से युक्त मानव के रूप में प्रस्तुत किया है। उनकी नारी न तो केवल सहनशीलता की मूर्ति है और न ही अराजक विद्रोह की प्रतीक, बल्कि वह विवेक, मर्यादा और मानवीय गरिमा के संतुलित स्वरूप को अभिव्यक्त करती है। यह शोध टैगोर की कहानियों एवं उपन्यासों के चयनित नारी पात्रों के माध्यम से यह स्पष्ट करता है कि टैगोर की नारी चेतना भारतीय सामाजिक संरचना में स्त्री-मुक्ति की एक मौलिक और मानवीय अवधारणा प्रस्तुत करती है।

बीज शब्द (Keywords): टैगोर, नारी चेतना, कथा साहित्य, स्त्री अस्मिता, पितृसत्ता, सामाजिक चेतना।

प्रस्तावना : रवीन्द्रनाथ टैगोर आधुनिक भारतीय साहित्य के ऐसे विराट रचनाकार हैं, जिनकी साहित्यिक चेतना मानवतावाद, सामाजिक यथार्थ और नैतिक मूल्यों से गहराई से अनुप्राणित है। उनका साहित्य सौंदर्यानुभूति तक सीमित न रहकर पाठक को जीवन, समाज और मनुष्य की आंतरिक जटिलताओं से साक्षात्कार कराता है। टैगोर के कथा साहित्य में नारी जीवन के विविध पक्ष—पीड़ा, प्रेम, संघर्ष, आत्मसम्मान और स्वतंत्रता—अत्यंत संवेदनशीलता और यथार्थबोध के साथ अभिव्यक्त हुए हैं।

टैगोर जिस युग में सक्रिय थे, उस समय भारतीय समाज में स्त्री की स्थिति सामाजिक रूढ़ियों, पितृसत्तात्मक मानसिकता, अशिक्षा और आर्थिक परनिर्भरता के कारण अत्यंत दयनीय थी। ऐसे परिवेश में टैगोर

ने नारी को करुणा की वस्तु नहीं, बल्कि स्वतंत्र चेतना से संपन्न, विवेकशील और आत्मसम्मानी मानव के रूप में प्रस्तुत किया। यही कारण है कि उनके कथा साहित्य में नारी चेतना एक सशक्त, मौलिक और प्रगतिशील स्वरूप ग्रहण करती है।

नारी चेतना : अवधारणा एवं तात्पर्य : नारी चेतना से आशय उस आत्मबोध से है, जिसके माध्यम से स्त्री अपने अस्तित्व, अस्मिता, अधिकार और सामाजिक भूमिका के प्रति सजग होती है। यह चेतना केवल विद्रोह या असंतोष तक सीमित नहीं रहती, बल्कि आत्मसम्मान, विवेक और मानवीय गरिमा की अभिव्यक्ति है।

नारी चेतना : अवधारणा एवं तात्पर्य : नारी चेतना से तात्पर्य स्त्री के उस आत्मबोध से है, जिसके द्वारा वह अपने अस्तित्व, अस्मिता, अधिकार और सामाजिक भूमिका के प्रति सजग होती है। यह चेतना केवल विद्रोह या असंतोष की अभिव्यक्ति न होकर आत्मसम्मान, विवेक और मानवीय गरिमा का संतुलित स्वरूप है।

टैगोर की नारी चेतना : रवीन्द्रनाथ टैगोर की नारी चेतना भारतीय सामाजिक यथार्थ से गहराई से जुड़ी हुई है। उन्होंने स्त्री को केवल करुणा या सहनशीलता की प्रतीक के रूप में प्रस्तुत नहीं किया, बल्कि उसे स्वतंत्र चेतना, आत्मसम्मान और विवेक से युक्त मानव के रूप में देखा है। टैगोर के अनुसार नारी की वास्तविक पहचान उसकी मानवीय गरिमा में निहित है, न कि परंपरागत बंधनों में।

टैगोर की नारी चेतना मानवीय मूल्यों पर आधारित है। उनकी रचनाओं में स्त्री प्रेम, करुणा, त्याग और संवेदनशीलता के साथ-साथ आत्मनिर्णय की शक्ति भी रखती है। वह अपने जीवन के प्रश्नों पर विचार करती है और आवश्यकता पड़ने पर सामाजिक अन्याय के विरुद्ध मौन या स्पष्ट प्रतिरोध भी करती है। टैगोर की स्त्री आत्मविहीन परंपराओं को स्वीकार नहीं करती, बल्कि विवेक के आधार पर उनका मूल्यांकन करती है।

टैगोर की नारी न तो परंपराओं की अंधानुयायी है और न ही उच्छृंखल स्वतंत्रता की पक्षधर। उनकी दृष्टि में स्वतंत्रता का अर्थ मर्यादा का त्याग नहीं, बल्कि आत्मबोध और उत्तरदायित्व की स्वीकृति है। इसीलिए टैगोर की नारी चेतना संतुलित और मर्यादित स्वरूप ग्रहण करती है, जिसमें अधिकार और कर्तव्य दोनों का समन्वय दिखाई देता है। पितृसत्तात्मक समाज में स्त्री की उपेक्षा, शोषण और सीमित भूमिका को टैगोर ने गहराई से अनुभव किया और उसे अपने कथा साहित्य में अभिव्यक्त किया। उनकी नारी पात्र सामाजिक बंधनों पर प्रश्न उठाती हैं, किंतु विद्रोह को उद्देश्य नहीं बनातीं। वे मानवीय गरिमा और आत्मसम्मान की रक्षा को प्राथमिकता देती हैं।

इस प्रकार टैगोर की नारी चेतना भारतीय समाज की यथार्थ स्थितियों से उत्पन्न होकर एक मानवीय और विवेकपूर्ण दृष्टिकोण प्रस्तुत करती है। यह चेतना नारी को समाज में समानता, सम्मान और स्वतंत्र अस्तित्व की ओर उन्मुख करती है, जिससे टैगोर का साहित्य नारी चेतना के विकास में एक महत्त्वपूर्ण योगदान सिद्ध होता है।**टैगोर की स्त्री-दृष्टि का स्वरूप :** टैगोर स्त्री को पुरुष की अधीनस्थ सत्ता के रूप में नहीं देखते। वे स्त्री और पुरुष को समान मानवीय अस्तित्व के रूप में स्वीकार करते हैं। टैगोर की नारी—

- बौद्धिक रूप से सक्षम है
- आत्मनिर्णय की शक्ति रखती है
- सामाजिक बंधनों पर प्रश्न उठाती है
- प्रेम, पीड़ा और संघर्ष को गहराई से अनुभव करती है

टैगोर का विश्वास है कि समाज का वास्तविक विकास तभी संभव है, जब स्त्री को उसकी संपूर्ण मानवीय गरिमा के साथ स्वीकार किया जाए।

टैगोर के कथा साहित्य में नारी चेतना के विविध रूप

(क) कहानियों में नारी चेतना :

1. 'स्त्रीर पत्र' : नारी आत्मचेतना का घोषणापत्र : 'स्त्रीर पत्र' टैगोर की नारी चेतना का सर्वाधिक प्रखर उदाहरण है। मृणाल द्वारा लिखा गया पत्र नारी आत्मसम्मान, अस्मिता और स्वतंत्रता की सशक्त उद्घोषणा है। यह कहानी पितृसत्तात्मक व्यवस्था के विरुद्ध नारी के विवेकपूर्ण विद्रोह को अभिव्यक्त करती है।

2. 'देनापावना' : नारी उत्पीड़न का यथार्थ : इस कहानी में दहेज प्रथा और नारी शोषण का अमानवीय रूप प्रस्तुत हुआ है। निरुपमा का मौन और उसकी करुण मृत्यु समाज की नृशंस मानसिकता पर तीखा प्रहार करती है। यहाँ नारी चेतना मौन प्रतिरोध के रूप में प्रकट होती है।

3. 'नष्टनीड़' : भावनात्मक चेतना का संघर्ष : चारुलता का चरित्र यह स्पष्ट करता है कि स्त्री केवल सामाजिक सुरक्षा से संतुष्ट नहीं होती, बल्कि भावनात्मक सम्मान भी उसकी मूल आवश्यकता है।

(ख) उपन्यासों में नारी चेतना

1. 'चोखेर बाली' की बिनोदिनी : बिनोदिनी विधवा नारी चेतना का विद्रोही और जटिल स्वरूप है। वह परंपरागत विधवा जीवन को अस्वीकार कर अपने अस्तित्व की खोज करती है।

2. 'घरे-बाइरे' की बिमला : बिमला का चरित्र परंपरा से आधुनिकता की ओर बढ़ती नारी चेतना की यात्रा को रूपायित करता है।

3. 'गोरा' में नारी पात्र : 'गोरा' में नारी केवल सहचरी नहीं, बल्कि सामाजिक और वैचारिक विमर्श की सक्रिय सहभागी है।

नारी शिक्षा और सामाजिक चेतना : टैगोर नारी शिक्षा को सामाजिक परिवर्तन का मूल आधार मानते हैं। शिक्षित स्त्री ही अपने अधिकारों के प्रति सजग होकर सामाजिक अन्याय का प्रतिरोध कर सकती है।

सामाजिक रूढ़ियों के प्रति टैगोर का दृष्टिकोण

टैगोर ने अपने कथा साहित्य में : रवीन्द्रनाथ टैगोर ने अपने कथा साहित्य के माध्यम से भारतीय समाज में व्याप्त अनेक सामाजिक रूढ़ियों का यथार्थपरक एवं आलोचनात्मक चित्रण किया है। उन्होंने विशेष रूप से दहेज प्रथा, बाल विवाह, विधवा उत्पीड़न और पितृसत्तात्मक मानसिकता जैसी कुप्रथाओं को अपनी रचनाओं का विषय बनाकर समाज की अमानवीय प्रवृत्तियों को उजागर किया है।

टैगोर की कहानियों और उपन्यासों में दहेज प्रथा के कारण नारी को होने वाले शारीरिक और मानसिक कष्टों का मार्मिक चित्रण मिलता है। बाल विवाह के माध्यम से उन्होंने स्त्री के बचपन और व्यक्तित्व के दमन को रेखांकित किया है। इसी प्रकार विधवा उत्पीड़न के चित्रण में टैगोर उस सामाजिक व्यवस्था पर तीखा प्रश्न उठाते हैं, जो स्त्री को जीवनभर के लिए त्याग और संयम की मूर्ति बना देती है।

पितृसत्तात्मक मानसिकता के प्रति टैगोर का दृष्टिकोण अत्यंत आलोचनात्मक है। वे स्त्री को पुरुष की अधीन वस्तु मानने वाली सोच का विरोध करते हैं और स्त्री को स्वतंत्र एवं विवेकशील मानव के रूप में स्थापित करते हैं। टैगोर का उद्देश्य केवल सामाजिक बुराइयों को दिखाना नहीं, बल्कि पाठक को आत्मचिंतन के लिए प्रेरित करना है। इस प्रकार टैगोर का कथा साहित्य सामाजिक रूढ़ियों के विरुद्ध मानवीय चेतना का सशक्त स्वर प्रस्तुत करता है और नारी के सम्मान एवं समानता की आवश्यकता को प्रभावी ढंग से रेखांकित करता है।

- दहेज प्रथा
- बाल विवाह
- विधवा उत्पीड़न
- पितृसत्तात्मक मानसिकता

का यथार्थपरक और आलोचनात्मक चित्रण किया है।

उपसंहार : निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि रवीन्द्रनाथ टैगोर के कथा साहित्य में नारी चेतना बहुआयामी, संतुलित और मानवीय रूप में अभिव्यक्त हुई है। टैगोर की नारी केवल पीड़ा सहने वाली निष्क्रिय पात्र नहीं है, बल्कि वह अपने अस्तित्व, अस्मिता और आत्मसम्मान के प्रति पूर्णतः सजग है। वह सामाजिक रूढ़ियों और पितृसत्तात्मक मानसिकता को विवेक के आधार पर परखती है और आवश्यकता पड़ने पर उनके विरुद्ध संघर्ष भी करती है।

टैगोर की नारी चेतना उच्छृंखल विद्रोह का रूप नहीं लेती, बल्कि मर्यादा और मानवीय मूल्यों के भीतर रहकर अपने अधिकारों की तलाश करती है। उनकी स्त्री पात्र प्रेम, करुणा और संवेदनशीलता के साथ-साथ आत्मनिर्णय और बौद्धिक चेतना से भी संपन्न हैं। यही संतुलन टैगोर की नारी दृष्टि को विशिष्ट बनाता है।

इस प्रकार टैगोर का कथा साहित्य भारतीय समाज में स्त्री की स्थिति पर गंभीर विमर्श प्रस्तुत करता है और नारी चेतना के विकास की दिशा में एक महत्वपूर्ण साहित्यिक उपलब्धि सिद्ध होता है। उनका साहित्य न केवल अपने समय की सामाजिक सच्चाइयों को उजागर करता है, बल्कि आधुनिक संदर्भ में भी स्त्री-सशक्तिकरण की प्रासंगिक दृष्टि प्रदान करता है।

संदर्भ ग्रंथ :

1. टैगोर, रवीन्द्रनाथ – चयनित कहानियाँ
2. टैगोर, रवीन्द्रनाथ – चोखेर बाली
3. टैगोर, रवीन्द्रनाथ – घरे-बाइरे
4. टैगोर, रवीन्द्रनाथ – गोरा
5. टैगोर, रवीन्द्रनाथ – कथा साहित्य : एक अध्ययन
6. रामविलास शर्मा – भारतीय साहित्य और समाज
7. नगेन्द्र – आधुनिक हिन्दी साहित्य का इतिहास
8. मैनेजर पांडेय – साहित्य और सामाजिक चेतना
9. नामवर सिंह – कहानी और विचारधारा
10. नामवर सिंह – आधुनिकता और साहित्य
11. दूधनाथ सिंह – कहानी : अनुभव और यथार्थ
12. शिवकुमार मिश्र – नारी विमर्श और हिन्दी साहित्य
13. सुधा अरोड़ा – नारी लेखन : नए संदर्भ
14. मैत्रेयी पुष्पा – स्त्री विमर्श : प्रश्न और चुनौतियाँ
15. इन्द्रनाथ चौधरी – आधुनिक भारतीय साहित्य में नारी चेतना

•